अब मैं नहीं गरीब

प्रफुल्ल कोलख्यान

अपने ही कंधे पर बढ़कर लादे कोई सलीब
समझो डेमोक्रेसी के है अब वह बहुत करीब

बुरा होता नहीं, जितना दिखता है गरीब
मुश्किल यह कि राजदार ही हुआ रकीब

लेखा-जोखा ठीक बिगाड़ में है तेरा नसीब
मछली पूछे रसोइये से, तेरी कैसी तहजीब

मेरा कातिल मिल गया, अब मैं नहीं गरीब
बात इतनी कातिल का कितना बड़ा नसीब

स्मतंत्रता-समता के थे सपने ही बड़े अजीब
जाने क्यों हलचल, में अबकी बहुत मगरीब